गलातियों

1 पौलुस की ओर से, जो एक प्रेरित है, जिसने एक
ऐसा सेवा व्रत धारण किया है, जो उसे न तो मनुष्यों से
प्राप्त हुआ है और न किसी एक मनुष्य द्वारा दिया गया है,
बल्कि यीशु मसीह द्वारा उस परम पिता परमेश्वर से, जिसने
यीशु मसीह को मरे हुओं में से फिर से जिला दिया था, दिया
गया है।
2और मेरे साथ जो भाई हैं, उन सब की ओर से
गलातिया* क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम:
3हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की
ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।। 4जिसने हमारे
पापों के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया ताकि इस
पापपूर्ण संसार से, जिसमें हम रह रहे हैं, वह हमें
छुटकारा दिला सके। हमारे परम पिता परमेश्वर की यही
इच्छा है। 5वह सदा सर्वदा महिमावान हो आमीन!

सच्चा सुसमाचार एक ही है

6मुझे अचरज है! कि तुम लोग इतनी जल्दी उस
परमेश्वर से मुँह मोड़ कर, जिसने मसीह के अनुग्रह द्वारा
तुम्हें बुलाया था, किसी दूसरे सुसमाचार की ओर जा रहे
हो। 7कोई दूसरा सुसमाचार तो वास्तव में है ही नहीं,
किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हें भरमा रहे हैं और मसीह
के सुसमाचार में हेर–फेर का जतन कर रहे हैं। 8किन्तु
चाहे हम हों और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हें हमारे
द्वारा सुनाये गये सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है
तो उसे धिक्कार है। 9जैसा कि हम पहले कह चुके हैं,
वैसा ही मैं अब फिर दोहरा रहा हूँ कि यदि चाहे हम हों,
और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि तुम्हारे द्वारा स्वीकार किए
गए सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार
है।
10क्या इससे तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं मनुष्यों का
समर्थन चाहता हूँ? या यह कि मुझे परमेश्वर का समर्थन
मिले? अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने का जतन
कर रहा हूँ? यदि मैं मनुष्यों को प्रसन्न करता तो मैं मसीह
के सेवक का सा नहीं होता।

पौलुस का सुसमाचार परमेश्वर से प्राप्त है

11हे भाइयों, मैं तुम्हें जताना चाहता हूँ कि वह सुसमाचार
जिसका उपदेश तुम्हें मैंने दिया है, 12कोई मनुष्य से प्राप्त
सुसमाचार नहीं हैं क्योंकि न तो मैंने इसे किसी मनुष्य से
पाया है और न ही किसी मनुष्य ने इसकी शिक्षा मुझे दी है।
बल्कि दैवी संदेश के रूप में यह यीशु मसीह द्वारा मेरे
सामने प्रकट हुआ है।
13यहूदी धर्म में मैं पहले कैसे जीया करता था, उसे तुम
सुन चुके हो, और तुम यह भी जानते हो कि मैंने परमेश्वर
की कलीसिया पर कितना अत्याचार किया है और उसे
मिटा डालने का प्रयास तक किया है। 14यहूदी धर्म के
पालने में मैं अपने युग के समकालीन यहूदियों से आगे था
क्योंकि मेरे पूर्वजों से जो परम्पराएँ मुझे मिली थीं, उनमें
मेरी उत्साहपूर्ण आस्था थी।
15किन्तु परमेश्वर ने तो मेरे जन्म से पहले ही मुझे चुन
लिया था और अपने अनुग्रह में मुझे बुला लिया था। 16ताकि
वह मुझे अपने पुत्र का ज्ञान करा दे जिससे मैं ग़ैर यहूदियों
के बीच उसके सुसमाचार का प्रचार करूँ। उस समय
तत्काल मैंने किसी मनुष्य से कोई राय नहीं ली। 17और न
ही मैं उन लोगों के पास यरूशलेम गया जो मुझसे पहले
प्रेरित बने थे। बल्कि मैं अरब को गया और फिर वहाँ से
दमिश्क लौट आया।

गलातिया कदाचित यह वही क्षेत्र रहा होगा जहाँ अपनी पहली धार्मिक सेवा यात्रा के अवसर पर पौलुस ने उपदेश दिया था और कलीसिया की स्थापना की थी। देखें प्रेरितों के काम 13 और 14

18फिर तीन साल के बाद पतरस से मिलने के लिए मैं
यरूशलेम पहुँचा और उसके साथ एक पखवाड़े ठहरा।
19किन्तु वहाँ मैं प्रभु के भाई याकूब को छोड़ कर किसी
भी दूसरे प्रेरित से नहीं मिला। 20मैं परमेश्वर के सामने
शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ में लिख रहा हूँ उसमें
झूठ नहीं है। 21उसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के
प्रदेशों में गया।

22किन्तु यहूदिया के मसीह को मानने वाले कलीसिया
व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं जानते थे। 23किन्तु वे लोगों को
कहते सुनते थे, "वही व्यक्ति जो पहले हमें सताया करता
था, उसी विश्वास, यानी उसी मत का प्रचार कर रहा है,
जिसे उसने कभी नष्ट करने का प्रयास किया था।" 24मेरे
कारण उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की।

पौलुस को प्रेरितों की मान्यता

2 चौदह साल बाद मैं फिर से यरूशलेम गया। बरनाबास
मेरे साथ था और तितुस को भी मैंने साथ ले लिया
था। 2मैं परमेश्वर के दिव्य दर्शन के कारण वहाँ गया था।
मैं ग़ैर यहूदियों के बीच जिस सुसमाचार का उपदेश दिया
करता हूँ, उसी सुसमाचार को मैंने एक निजी सभा के बीच
कलीसिया के मुखियाओं को सुनाया। मैं वहाँ इसलिए गया
था कि परमेश्वर ने मुझे दर्शाया था कि मुझे वहाँ जाना
चाहिए। ताकि जो काम मैंने पिछले दिनों किया था, या जिसे
मैं कर रहा हूँ, वह बेकार न चला जाये। 3परिणाम–स्वरूप
तितुस तक को, जो मेरे साथ था, यद्यपि वह यूनानी है, फिर
भी उसे ख़तना कराने के लिये विवश नहीं किया गया।
4किन्तु उन झूठे बंधुओं के कारण जो लुके–छिपे हमारे
बीच भेदिये के रूप में यीशु मसीह में हमारी स्वतन्त्रता का
पता लगाने को इसलिए घुस आये थे कि हमें दास बना
सकें, यह बात उठी 5किन्तु हमने उनकी अधीनता में घुटने
नहीं टेके ताकि वह सत्य जो सुसमाचार में निवास करता
है, तुम्हारे भीतर बना रहे।

6किन्तु जाने माने प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कुछ नहीं
मिला। (वे कैसे भी थे, मुझे इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।
बिना किसी भेदभाव के सभी मनुष्य परमेश्वर के सामने
एक जैसे हैं।) उन सम्मानित लोगों से मुझे या मेरे सुसमाचार
को कोई लाभ नहीं हुआ। 7किन्तु इन मुखियाओं ने देखा
कि परमेश्वर ने मुझे वैसे ही एक विशेष काम सौंपा है
जैसे पतरस को परमेश्वर ने यहूदियों को सुसमाचार
सुनाने का काम दिया था। किन्तु परमेश्वर ने ग़ैर यहूदी
लोगों को सुसमाचार सुनाने का काम मुझे दिया। 8परमेश्वर
ने पतरस को एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति
दी थी। पतरस ग़ैर यहूदी लोगों के लिए एक प्रेरित है।
परमेश्वर ने मुझे भी एक प्रेरित के रूप में काम करने की
शक्ति दी है। किन्तु मैं उन लोगों का प्रेरित हूँ जो यहूदी नहीं
हैं। 9इस प्रकार उन्होंने मुझ पर परमेश्वर के उस अनुग्रह
को समझ लिया और कलीसिया के स्तम्भ समझे जाने
वाले याकूब, पतरस और यूहन्ना ने बरनाबास और मुझसे
साझेदारी के प्रतीक रूप में हाथ मिला लिया। और वे सहमत
हो गये कि हम विधर्मियों के बीच उपदेश देते रहें और वे
यहूदियों के बीच। 10उन्होंने हमसे बस यही कहा कि हम
उनके निर्धनों का ध्यान रखें। और मैं इसी काम को न
केवल करना चाहता था बल्कि इसके लिए लालायित भी
था।

पौलुस की दृष्टि में पतरस अनुचित

11किन्तु जब पतरस अंताकिया आया तो मैंने खुल कर
उसका विरोध किया क्योंकि वह अनुचित था। 12क्योंकि
याकूब द्वारा भेजे हुए कुछ लोगों के यहाँ पहुँचने से पहले
वह ग़ैर यहूदियों के साथ खाता पीता था। किन्तु उन लोगों
के आने के बाद उसने ग़ैर यहूदियों से अपना हाथ खींच
लिया और स्वयं को उनसे अलग कर लिया। उसने उन
लोगों के डर से ऐसा किया जो चाहते थे कि ग़ैर यहूदियों
का भी ख़तना होना चाहिए। 13दूसरे यहूदियों ने भी इस
दिखावे में उसका साथ दिया। यहाँ तक कि इस दिखावे के
कारण बरनाबास तक भटक गया। 14मैंने जब यह देखा
कि सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार वे सीधे रास्ते
पर नहीं चल रहे हैं तो सब के सामने पतरस से कहा, "जब
तुम यहूदी होकर भी ग़ैर यहूदी का सा जीवन जीते हो, तो
फिर ग़ैर यहूदियों को यहूदियों की रीति पर चलने को
विवश कैसे कर सकते हो?"

15हम तो जन्म के यहूदी हैं। हमारा पापी ग़ैर यहूदी से
कोई सम्बन्ध नहीं है। 16फिर भी हम यह जानते हैं कि
किसी व्यक्ति को व्यवस्था के विधान का पालन करने के
कारण नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के कारण नेक
ठहराया जाता है। हमने इसी लिये यीशु मसीह का विश्वास
धारण किया है ताकि इस विश्वास के कारण हम नेक
ठहराये जायें, न कि व्यवस्था के विधान के पालन के

कारण। क्योंकि उसे पालने से तो कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं
होता।
17किन्तु यदि हम जो यीशु मसीह में अपनी स्थिति के
कारण धर्मी ठहराया जाना चाहते हैं, हम ही विधर्मियों के
समान पापी पाये जायें तो इसका अर्थ क्या यह नहीं है कि
मसीह पाप को बढ़ावा देता है। निश्चय ही नहीं।" 18यदि
जिसका मैं त्याग कर चुका हूँ, उस रीति का ही फिर से
उपदेश देने लगूँ तब तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करने वाला
अपराधी बन जाऊँगा। 19क्योंकि व्यवस्था के विधान के
द्वारा व्यवस्था के लिये तो मैं मर चुका ताकि परमेश्वर के
लिये मैं फिर से जी जाऊँ मसीह के साथ मुझे क्रूस पर
चढ़ा दिया है। 20इसी से अब आगे मैं जीवित नहीं हूँ किन्तु
मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मैं जिस
जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है।
परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम
करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर
दिया। 21मैं परमेश्वर के अनुग्रह को नहीं नकार रहा हूँ,
किन्तु यदि धार्मिकता व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर
से नाता जुड़ा पाता तो मसीह बेकार ही अपने प्राण क्यों
देता।

परमेश्वर का वरदान विश्वास से मिलता है

3 हे मूर्ख गलातियो, तुम पर किसने जादू कर दिया
है? तुम्हें तो, सब के सामने यीशु मसीह को क्रूस
पर कैसे चढ़ाया गया था, इसका पूरा विवरण दे दिया
गया था। 2मैं तुमसे बस इतना जानना चाहता हूँ कि तुमने
आत्मा का वरदान क्या व्यवस्था के विधान को पालने से
पाया था अथवा सुसमाचार के सुनने और उस पर विश्वास
करने से? 3क्या तुम इतने मूर्ख हो सकते हो कि जिस
जीवन को तुमने आत्मा से आरम्भ किया, उसे अब
हाड़-माँस के शरीर की शक्ति से पूरा करोगे? 4तुमने
इतने कष्ट क्या बेकार ही उठाये? आशा है कि वे बेकार
नहीं थे। 5परमेश्वर, जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है और
जो तुम्हारे बीच आश्चर्य कर्म करता है, वह यह इसलिए
करता है कि तुम व्यवस्था के विधान को पालते हो या
इसलिए कि तुमने सुसमाचार को सुना है और उस पर
विश्वास किया है।
6 यह वैसे ही है जैसे कि इब्राहीम के विषय में शास्त्र
कहता है: "उसने परमेश्वर में विश्वास किया और यह
उसके लिये धार्मिकता गिनी गई।"* 7 तो फिर तुम यह
जान लो, "इब्राहीम के सच्चे वंशज वे ही हैं जो विश्वास
करते हैं। 8शास्त्र ने पहले ही बता दिया था, "परमेश्वर
ग़ैर यहूदियों को भी उनके विश्वास के कारण धर्मीज्ञ
ठहरायेगा। और इन शब्दों के साथ पहले से ही इब्राहीम
को परमेश्वर द्वारा सुसमाचार से अवगत करा दिया गया
था।"* 9 इसी लिये वे लोग जो विश्वास करते हैं विश्वासी
इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं। 10किन्तु वे सभी लोग
जो व्यवस्था के विधानों के पालन पर निर्भर रहते हैं, वे
तो किसी अभिशाप के अधीन हैं। शास्त्र में लिखा है:
"ऐसा हर व्यक्ति शापित है जो व्यवस्था के विधान की
पुस्तक में लिखी हर बात का लगन के साथ पालन नहीं
करता।"* 11अब यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के विधान के
द्वारा परमेश्वर के सामने कोई भी नेक नहीं ठहरता है।
क्योंकि शास्त्र के अनुसार "धर्मी व्यक्ति विश्वास के सहारे
जीयेगा।"* 12किन्तु व्यवस्था का विधान तो विश्वास पर
नहीं टिका है बल्कि शास्त्र के अनुसार, "जो व्यवस्था के
विधान को पालेगा, वह उन ही के सहारे जीयेगा।"*
13मसीह ने हमारे शाप को अपने ऊपर ले कर व्यवस्था
के विधान के शाप से हमें मुक्त कर दिया। शास्त्र कहता
है: "हर कोई जो वृक्ष पर टाँग दिया जाता है, शापित
है।"* 14मसीह ने हमें इसलिये मुक्त किया कि, इब्राहीम
को दी गयी आशीश मसीह यीशु के द्वारा ग़ैर यहूदियों को
भी मिल सके ताकि विश्वास के द्वारा हम उस आत्मा को
प्राप्त करें, जिसका वचन दिया गया था।

व्यवस्था का विधान और वचन

15हे भाइयो, अब मैं तुम्हें दैनिक जीवन से एक उदाहरण
देने जा रहा हूँ। देखो, जैसे किसी मनुष्य द्वारा कोई करार
कर लिया जाने पर, न तो उसे रद्द किया जा सकता है
और न ही उस में से कुछ घटाया जा सकता है। और न
बढ़ाया, 16वैसे ही इब्राहीम और उसके भावी वंशज के
साथ की गयी प्रतिज्ञा के संदर्भ में भी है। (देखो, शास्त्र यह

उसने ... गिनी गई उत्पत्ति 15:6
परमेश्वर ग़ैर ... गया था उत्पत्ति 12:3
ऐसा हर ... नहीं करता व्यवस्था. 27:26
धर्मी ... जीयेगा हबक. 2:4
जो व्यवस्था ... जीयेगा लैव्य. 18:5
हर कोई ... शापित है व्यवस्था. 21:22-23

नहीं कहता, “और उसके वंशजों को” यदि ऐसा होता तो बहुतों की ओर संकेत होता किन्तु शास्त्र में एक वचन का प्रयोग है। शास्त्र कहता है “और तेरे वंशज को” जो मसीह है।) 17मेरा अभिप्राय यह है कि जिस करार को परमेश्वर ने पहले ही सुनिश्चित कर दिया उसे चार सौ तीस साल बाद आने वाला व्यवस्था का विधान नहीं बदल सकता और न ही उसके वचन को नाकारा ठहरा सकता है। 18क्योंकि यदि उत्तराधिकार व्यवस्था के विधान पर टिका है तो फिर वह वचन पर नहीं टिकेगा। किन्तु परमेश्वर ने उत्तराधिकार वचन के द्वारा मुक्त रूप से इब्राहीम को दिया था।

19फिर भला व्यवस्था के विधान का प्रयोजन क्या रहा? आज्ञाउल्लंघन के अपराध के कारण व्यवस्था के विधान को वचन से जोड़ दिया गया था ताकि जिस के लिए वचन दिया गया था, उस वंशज के आने तक वह रहे। व्यवस्था का विधान एक मध्यस्थ के रूप में मूसा की सहायता से स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। 20अब देखो, मध्यस्थ तो दो के बीच होता है, किन्तु परमेश्वर तो एकही है।

मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रयोजन

21क्या इसका यह अर्थ है कि व्यवस्था का विधान परमेश्वर के वचन का विरोधी है? निश्चित रूप से नहीं। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था का विधान दिया गया होता जो लोगों में जीवन का संचार कर सकता तो वह व्यवस्था का विधान ही परमेश्वर के सामने धार्मिकता को सिद्ध करने का साधन बन जाता। 22किन्तु शास्त्र ने घोषणा की है कि यह समूचा संसार पाप की शक्ति के अधीन है। ताकि यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर जो वचन दिया गया है, वह विश्वासी जनों को भी मिले।

23इस विश्वास के आने से पहले, हमें व्यवस्था के विधान की देखरेख में, इस आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक, बंदी के रूप में रखा गया। 24इस प्रकार व्यवस्था का विधान हमें मसीह तक ले जाने के लिए एक कठोर अभिभावक था ताकि अपने विश्वास के आधार पर हम नेक ठहरें। 25अब जब यह विश्वास प्रकट हो चुका है तो हम उस कठोर अभिभावक के अधीन नहीं हैं।

26यीशु मसीह में विश्वास के कारण तुम सभी परमेश्वर की संतान हो। 27क्योंकि तुम सभी जिन्होंने मसीह का बपतिस्मा ले लिया है, मसीह में समा गये हो। 28सो अब किसी में कोई अन्तर नहीं रहा न कोई यहूदी रहा, न ग़ैर यहूदी, न दास रहा, न स्वतन्त्र, न पुरुष रहा, न स्त्री, क्योंकि मसीह यीशु में तुम सब एक हो। 29और क्योंकि तुम मसीह के हो तो फिर तुम इब्राहीम के वंशज हो। और परमेश्वर ने जो वचन इब्राहीम को दिया था, उस वचन के उत्तराधिकारी हो।

4 मैं कहता हूँ कि उत्तराधिकारी जब तक बालक है तो चाहे सब कुछ का स्वामी वही होता है, फिर भी वह दास से अधिक कुछ नहीं रहता। 2वह अभिभावकों और घर के सेवकों के तब तक अधीन रहता है, जब तक उसके पिता द्वारा निश्चित समय नहीं आ जाता। 3हमारी भी ऐसी ही स्थिति है। हम भी जब बच्चे थे तो सांसारिक नियमों के दास थे। 4किन्तु जब उचित अवसर आया तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो एक स्त्री से जन्मा था। और व्यवस्था के अधीन जीता था। 5ताकि वह व्यवस्था के अधीन व्यक्तियों को मुक्त कर सके जिससे हम परमेश्वर के गोद लिये बच्चे बन सकें।

6और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, सो उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा। वही आत्मा “हे अब्बा,” “हे पिता” कहते हुए पुकारती है। 7इसलिये अब तू दास नहीं है बल्कि पुत्र है और क्योंकि तू पुत्र है, इसलिये तुझे परमेश्वर ने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया है।

गलाती मसीहियों के लिए पौलुस का प्रेम

8पहले तुम लोग जब परमेश्वर को नहीं जानते थे तो तुम लोग देवताओं के दास थे। वे वास्तव में परमेश्वर नहीं थे। 9किन्तु अब तुम परमेश्वर को जानते हो, या यूँ कहना चाहिये कि परमेश्वर के द्वारा अब तुम्हें पहचान लिया गया है। फिर तुम उन साररहित, दुर्बल नियमों की ओर क्यों लौट रहे हो। तुम फिर से उनके अधीन क्यों होना चाहते हो? 10तुम किन्ही विशेष दिनों, महीनों, ऋ तुओं और वर्षो को मानने लगे हो। 11तुम्हारे बारे में मुझे डर है कि तुम्हारे लिए जो काम मैंने किया है, वह सारा कहीं बेकार तो नहीं हो गया है।

12हे भाइयों, कृपया मेरे जैसे बन जाओ। देखो, मैं भी तो तुम्हारे जैसा बन गया हूँ, यह मेरी तुमसे प्रार्थना है, ऐसा नहीं है कि तुमने मेरे प्रति कोई अपराध किया है। 13तुम तो जानते ही हो कि अपनी शारीरिक व्याधि के

कारण मैंने पहली बार तुम्हें ही सुसमाचार सुनाया था। 14और
तुमने भी, मेरी अस्वस्थता के कारण, जो तुम्हारी परीक्षा
ली गयी थी, उससे मुझे छोटा नहीं समझा और न ही मेरा
निषेध किया। बल्कि तुमने परमेश्वर के स्वर्ग दूत के रूप
में मेरा स्वागत किया। मानों मैं स्वयं मसीह यीशु ही था।
15सो तुम्हारी उस प्रसन्नता का क्या हुआ? मैं तुम्हारे लिये
स्वयं इस बात का साक्षी हूँ कि यदि तुम समर्थ होते तो तुम
अपनी आँखें तक निकाल कर मुझे दे देते। 16सो क्या सच
बोलने से ही मैं तुम्हारा शत्रु हो गया?

17तुम्हें व्यवस्था के विधान पर चलाना चाहने वाले
तुममें बड़ी गहरी रुचि लेते हैं। किन्तु उनका उद्देश्य अच्छा
नहीं है। वे तुम्हें मुझ से अलग करना चाहते हैं। ताकि तुम
भी उनमें गहरी रुचि ले सको। 18कोई किसी में सदा गहरी
रुचि लेता रहे, यह तो एक अच्छी बात है किन्तु यह किसी
अच्छे के लिए होना चाहिये। और बस उसी समय नहीं, जब
मैं तुम्हारे साथ हूँ। 19मेरे प्रिय बच्चो! मैं तुम्हारे लिये एक
बार फिर प्रसववेदना को झेल रहा हूँ, जब तक तुम मसीह
जैसे ही नहीं हो जाते। 20मैं चाहता हूँ कि अभी तुम्हारे पास
आ पहुँचूँ और तुम्हारे साथ अलग ही तरह से बातें करूँ,
क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हारे लिये क्या
किया जाये।

सारा और हाजिरा का उदाहरण

21व्यवस्था के विधान के अधीन रहना चाहने वालों से
मैं पूछना चाहता हूँ: क्या तुमने व्यवस्था के विधान का यह
कहना नहीं सुना 22कि इब्राहीम के दो पुत्र थे। एक का
जन्म एक दासी से हुआ था और दूसरे का एक स्वतन्त्र स्त्री
से। 23दासी से पैदा हुआ पुत्र प्राकृतिक परिस्थितियों में जन्मा
था किन्तु स्वतन्त्र स्त्री से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था, वह
परमेश्वर के द्वारा की गयी प्रतिज्ञा का परिणाम था।

24इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है: ये दो स्त्रियाँ, दो
वाचओं का प्रतीक हैं। एक वाचा सिनै पर्वत से प्राप्त हुआ
था जिसने उन लोगों को जन्म दिया जो दासता के लिये थे।
यह वाचा हाजिरा से सम्बन्धित है। 25हाजिरा अरब में स्थित
सिनै पर्वत का प्रतीक है, वह वर्तमान यरूशलेम की ओर
संकेत करती है क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ दासता
भुगत रही है। 26किन्तु स्वर्ग में स्थित यरूशलेम स्वतन्त्र है।
और वही हमारी माता है। 27शास्त्र कहता है:

"बाँझ! आनन्द मना,
तूने किसी को न जना;
हर्ष नाद कर, तुझ को प्रसव वेदना न हुई,
और हँसी–खुशी में खिलखिला।
क्योंकि परित्यक्ता की अनगिनत संतानें हैं
उसकी उतनी नहीं है जो पतिवंती है।"

यशायाह 54:1

28सो भाइयों, अब तुम इसहाक की जैसी परमेश्वर के
वचन की संतान हो। 29 किन्तु जैसे उस समय प्राकृतिक
परिस्थितियों के अधीन पैदा हुआ आत्मा की शक्ति से उत्पन्न
हुए को सताता था, वैसी ही स्थिति आज है। 30किन्तु देखो,
पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इस दासी और इसके पुत्र को
निकाल कर बाहर करो क्योंकि यह दासी पुत्र तो स्वतन्त्र
स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।"* 31इसीलिए
हे भाइयो, हम उस दासी की संतान नहीं हैं, बल्कि हम तो
स्वतन्त्र स्त्री की संताने हैं।

स्वतन्त्र बने रहो

5 मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है, ताकि हम स्वतन्त्रता
का आनन्द ले सकें। इसलिये अपने विश्वास को दृढ़
बनाये रखो और फिर से व्यवस्था के विधान के जुए का
बोझ मत उठाओ। 2सुनो! स्वयं मैं, पौलुस तुमसे कह रहा हूँ
कि यदि ख़तना करा कर तुम फिर से व्यवस्था के विधान
की ओर लौटते हो तो तुम्हारे लिये मसीह का कोई महत्व
नहीं रहेगा। 3अपना ख़तना कराने देने वाले प्रत्येक व्यक्ति
को, मैं एक बार फिर से जताये देता हूँ कि उसे समूचे
व्यवस्था के विधान पर चलना अनिवार्य है। 4तुममें से
जितने भी लोग व्यवस्था के पालन के कारण धर्मी के रूप
में स्वीकृत होना चाहते हैं, वे सभी मसीह से दूर हो गये हैं
और परमेश्वर के अनुग्रह के क्षेत्र से बाहर हैं। 5किन्तु हम
विश्वास के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी स्वीकार किये
जाने की आशा रखते हैं। आत्मा की सहायता से हम इसकी
बाट जोह रहे हैं। 6क्योंकि मसीह यीशु में स्थिति के लिये न
तो ख़तना कराने का कोई महत्त्व है और न ख़तना नहीं
कराने का बल्कि उसमें तो प्रेम से पैदा होने वाले विश्वास
का ही महत्त्व है।

7तुम तो बहुत अच्छी तरह एक मसीह का जीवन जीते
रहे हो। अब तुम्हें, ऐसा क्या है जो सत्य पर चलने से

इस दासी ... नहीं होगा उत्पत्ति 21:10

रोक रहा है। [8]ऐसी विमति जो तुम्हें सत्य से दूर कर रही है, तुम्हारे बुलाने वाले परमेश्वर की ओर से नहीं आयी है।

[9]"थोड़ा सा ख़मीर गुँधे हुए समूचे आटे को ख़मीर से उठा लेता है।" [10]प्रभु के प्रति मेरा पूरा भरोसा है कि तुम किसी भी दूसरे मत को नहीं अपनाओगे किन्तु तुम्हें विचलित करने वाला चाहे कोई भी हो, उचित दंड पायेगा।

[11]हे भाइयों, यदि मैं आज भी, जैसा कि कुछ लोग मुझ पर लांछन लगाते हैं कि मैं ख़तने का प्रचार करता हूँ तो मुझे अब तक यातनाएँ क्यों दी जा रही हैं? और यदि मैं अब भी ख़तने की आवश्यकता का प्रचार करता हूँ, तब तो मसीह के क्रूस के कारणपैदा हुई मेरी सभी बाधाएँ समाप्त हो जानी चाहियें। [12]मैं तो चाहता हूँ कि वे जो तुम्हें डिगाना चाहते हैं, ख़तना कराने के साथ साथ अपने आपको बधिया ही करा डालते।

[13]किन्तु भाइयो, तुम्हें परमेश्वर ने स्वतन्त्र रहने को चुना है। किन्तु उस स्वतन्त्रता को अपने आप पूर्ण स्वभाव की पूर्ति का साधन मत बनने दो, इसके विपरीत प्रेम के कारण परस्पर एक दूसरे की सेवा करो। [14]क्योंकि समूचे व्यवस्था के विधान का सार संग्रह इस एक कथन में ही है: "अपने साथियों से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो।"* [15]किन्तु आपस में काट करते हुए यदि तुम एक दूसरे को खाते रहोगे तो देखो! तुम आपस में ही एक दूसरे को समाप्त कर दोगे।

मानव-प्रकृति और आत्मा

[16]किन्तु मैं कहता हूँ कि आत्मा के अनुशासन के अनुसार आचरण करो और अपनी पाप पूर्ण प्रकृति की इच्छाओं की पूर्ति मत करो। [17]क्योंकि शारीरिक भौतिक अभिलाषाएँ पवित्र आत्मा की अभिलाषाओं के और पवित्र आत्मा की अभिलाषाएँ शारीरिक भौतिक अभिलाषाओं के विपरीत होती हैं। इनका आपस में विरोध है। इसीलिए तो जो तुम करना चाहते हो, वह कर नहीं सकते। [18]किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के अनुशासन में चलते हो तो फिर व्यवस्था के विधान के अधीन नहीं रहते।

[19]अब देखो। हमारे शरीर की पापपूर्ण प्रकृति के कामों को तो सब जानते हैं। वे हैं: व्यभिचार अपवित्रता, भोगविलास, [20]मूर्ति पूजा, जादू-टोना, बैर भाव, लड़ाई-झगड़ा, डाह, क्रोध, स्वार्थीपन, मतभेद, फूट, ईर्ष्या, [21]नशा, लंपटता या ऐसी ही और बातें। अब मैं तुम्हें इन बातों के बारे में वैसे ही चेता रहा हूँ जैसे मैंने तुम्हें पहले ही चेता दिया था कि जो लोग ऐसी बातों में भाग लेंगे, वे परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे। [22]जबकि पवित्र आत्मा प्रेम, प्रसन्नता, शांति, धीरज, दयालुता, नेकी, विश्वास, [23]नम्रता और आत्म-संयम उपजाता है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था का विधान नहीं है। [24]उन लोगों ने जो यीशु मसीह के हैं, अपने पापपूर्ण मानव-स्वभाव को वासनाओं और इच्छाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। [25]क्योंकि जब हमारे इस नये जीवन का स्रोत आत्मा है तो आओ आत्मा के ही अनुसार चलें। [26]हम अभिमानी न बनें। एक दूसरे को न चिढ़ायें। और न ही परस्पर ईर्ष्या रखें।

एक दूसरे की सहायता करो

6 हे भाइयो, तुममें से यदि कोई व्यक्ति कोई पाप करते पकड़ा जाए तो तुम आध्यात्मिक जनों को चाहिये कि नम्रता के साथ उसे धर्म के मार्ग पर वापस लाने में सहायता करो। और स्वयं अपने लिये भी सावधानी बरतो कि कहीं तुम स्वयं भी किसी परीक्षा में न पड़ जाओ। [2]परस्पर एक दूसरे का भार उठाओ। इस प्रकार तुम मसीह की व्यवस्था का पालन करोगे। [3]यदि कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी अपने को महत्त्वपूर्ण समझता है तो वह अपने को धोखा देता है। [4]अपने कर्म का मूल्यांकन हर किसी को स्वयं करते रहना चाहिये। ऐसा करने पर ही उसे अपने आप पर, किसी दूसरे के साथ तुलना किये बिना, गर्व करने का अवसर मिलेगा। [5]क्योंकि अपना दायित्व हर किसी को स्वयं ही उठाना है।

[6]जिसे परमेश्वर का वचन सुनाया गया है, उसे चाहिये कि जो उत्तम वस्तुएँ उसके पास हैं, उनमें अपने उपदेशक को साझी बनाए।

जीवन खेत-बोने जैसा है

[7]अपने आपको मत छलो। परमेश्वर को कोई बुद्धू नहीं बना सकता क्योंकि जो जैसा बोयेगा, वैसा ही काटेगा। [8]जो अपनी काया के लिए बोयेगा, वह अपनी काया से विनाश की फसल काटेगा। किन्तु जो आत्मा के खेत में बीज बोएगा, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की फसल

अपने साथियों ... करते हो लैव्य. 19:18

काटेगा। 9इसलिये आओ हम भलाई करते कभी न थकें, क्योंकि यदि हम भलाई करते ही रहेंगे तो उचित समय आने पर हमें उसका फल मिलेगा। 10सो जैसे ही कोई अवसर मिले, हमें सभी के साथ भलाई करनी चाहिये, विशेषकर अपने धर्म–भाइयों के साथ।

पत्र का समापन

11देखो, मैंने तुम्हें स्वयं अपने हाथ से कितने बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है। 12ऐसे लोग जो शारीरिक रूप से अच्छा दिखावा करना चाहते हैं, तुम पर ख़तना कराने का दबाव डालते हैं। किन्तु वे ऐसा बस इसलिए करते हैं कि उन्हें मसीह के क्रूस के कारण यातनाएँ न सहनीं पड़ें।

13क्योंकि वे स्वयं भी जिनका ख़तना हो चुका है, व्यवस्था के विधान का पालन नहीं करते किन्तु फिर भी वे चाहते हैं कि तुम ख़तना कराओ ताकि वे तुम्हारे द्वारा इस शारीरिक प्रथा को अपनाए जाने पर डींगे मार सकें। 14किन्तु जिसके द्वारा मैं संसार के लिये और संसार मेरे लिये मर गया, प्रभु यीशु मसीह के उस क्रूस को छोड़ कर मुझे और किसी पर गर्व न हो। 15क्योंकि न तो ख़तने का कोई महत्त्व है और न बिना ख़तने का। यदि महत्त्व है तो वह नयी सृष्टि का है। 16इसलिये जो लोग इस धर्म–नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शांति तथा दया होती रहे।

17पत्र को समाप्त करते हुए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि अब मुझे कोई और दुःख मत दो। क्योंकि मैं तो पहले ही अपने देह में यीशु के घावों को लिए घूम रहा हूँ।

18हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्माओं के साथ बना रहे। आमीन।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:
- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html